P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-III*November-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

वल्लभाचार्य और पुष्टि मार्ग

अनिल कलसी
असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
एस.जी.जी.एस. खालसा कॉलेज,
माहिलपुर ,होशियारपुर,
पंजाब

सारांश

शुद्धाद्वैत दर्शन और पुष्टि मार्ग की स्थापना वल्लभाचार्य ने की। श्री कृष्ण को श्री नाथ के रूप में अराध्य मानते हुए वल्लभाचार्य के "सेवा" पर विशेष ज़ोर दिया। वल्लभाचार्य ने पूरे भारत की तीन बार धार्मिक यत्राएं की और 84 स्थानों पर अपनी बैठकें स्थापित कीं। बाद में विट्ठलनाथ गोसांई ने पुष्टि मार्ग के कर्मकाण्डों और रीति रिवाज़ों को संशोधित किया और अष्टछाप समूह की स्थापना की। 17वीं शताब्दी में पुष्टि मार्गियों के राजस्थान प्रस्थान करने से मेवाड़ क्षेत्र कृष्ण भक्ति का केन्द्र बन गया और नाथद्वारा की स्थापना से जहां इस क्षेत्र में एक नया तीर्थ स्थापित हुआ, वही पुष्टि मार्ग का विकास ब्रज क्षेत्र से आगे बढ़ कर राजस्थान और गुजरात तक हो गया।

मुख्य शब्द : पुष्टि, ब्रह्म, जीव, सेवा, अष्टछाप, श्रीनाथ, भक्ति, शुद्धाद्वैत।

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास का मध्ययुग अपने धार्मिक पुनरूत्थान के लिए प्रसिद्ध है। जहां इस काल में भक्ति और सूफी आंदोलन की शुरूआत हुई, वहीं कृष्ण भक्ति के क्षेत्र में कई संतों ने अपने नये दर्शन प्रतिपादित किए। इसी श्रृंखला में वल्लभाचार्य ने अपने शुद्धाद्वैत दर्शन का प्रचार किया और पुष्टि मार्ग की स्थापना की। यह मार्ग बिना किसी भेदभाव के सब के लिए खुला था, लेकिन इस मार्ग पर चलने के लिए एकमात्र शर्त श्री कृष्ण के प्रति समर्पण था। यही पूर्ण समर्पण ही भक्त को पूर्ण आनंद की ओर ले जाने का साधन था। आत्मा और ब्रह्म के संबन्धों को जानने का चिरकाल से ही प्रयास किया जाता रहा है। वेदों के ऋषि और उपनिषदों के आचार्य इसी प्रश्न पर चिन्तन करते रहे हैं, इसी चिन्तन से ही आगे चलकर भारतीय षट्दर्शनों का विकास हुआ। जैसे कपिल का सांख्यदर्शन, गौतम का न्यायदर्शन, कणाद का वैशेषिक दर्शन, पंतजलि का योग, जैमिनी का पूर्व मीमांसा और व्यास का उत्तर मीमांसा या वेदांत। ये दर्शन ब्रह्म, जीव के संबन्धों का सुन्दर निरूपण करते हैं। इसी परम्परा में मध्यकाल में जीव और ब्रह्म की एकता या द्वैत और इनके परस्पर संबन्धों पर भी विशद मनन हुआ और कई नए मत और दर्शन प्रकाश में आए। जैसे शंकराचार्य का अद्वैत दर्शन, रामानुज का विशिष्टाद्वैत, माध्वाचार्य का द्वैतवाद, निम्बार्काचार्य का द्वैताद्वैतवाद और वल्लभाचार्य का शुद्धाद्वैत। कालांतर में वल्लभाचार्य का मत कृष्ण भक्ति के क्षेत्र में बहुत प्रसिद्ध हुआ और इसने भक्ति मार्ग के प्रचार के साथ–साथ भारतीय संस्कृति को भी काफी समृद्ध किया।

अध्ययन का उद्देश्य

इस लेख का उद्देश्य वल्लभाचार्य के कृष्ण भक्ति में दिए गए योगदान और उनके पुष्टि मार्ग के दर्शन और विकास का वर्णन करना है।

प्रारम्भिक जीवन

वल्लभाचार्य कृष्ण भक्ति के महान् संत और दार्शनिक थे, जिन्होंने शुद्धाद्वैत (Pure-nondualism) की विचारधारा पर आधारित पुष्टिमार्ग की स्थापना की और अन्य संतों की तरह इनके जीवन के बारे में भी महत्त्वपूर्ण स्त्रोतों का अभाव है, क्योंकि इतिहासकारों का रुझान हमेशा से ही सम्राटों के क्रिया–कलापों को जानने की तरफ रहा है और संत हमेशा ही उपेक्षित रहे हैं, लेकिन साधारण जन के ह्रदय में इन संतों ने हमेशा ही राज किया है। फिर भी नाभादास की "भक्तमाल" और चौरासी वैष्णवों की वार्ता पुष्टिमार्ग के प्रमुख स्रोतों में से एक है।

वल्लभाचार्य के पूर्वज आंध्रप्रदेश के तेलुगु ब्राह्मण थे जो विष्णु स्वामी के सम्प्रदाय को मानते थे। वल्लभाचार्य का जन्म 1479 ई. में चम्पारणय (आधुनिक छत्तीसगढ़) के स्थान पर हुआ। आप के पिता का नाम लक्ष्मण भट्ट और माता का नाम इल्लमा था। आप के जन्म समय चारों ओर आराजकता का वातावरण था। मुस्लिम शासकों के अत्चार और धार्मिक असहनशीलता की नीति के कारण उत्तर और मध्य भारत में विशेषतया हिन्दुओं की स्थिती चिन्ताजनक थी। उनका जबरन धर्म परिवर्तन हो रहा था और उनके धार्मिक–स्थल नष्ट किए जा रहे थे।

नष्ट किए जा रहे थे। इन परिस्थितियों में वे अपना घर छोड़ने के लिए मजबूर हो रहे थे।

प्रारम्भ से ही वल्लभाचार्य में ज्ञान प्राप्त करने की विशेष रूचि थी। जल्दी ही आप ने षटदर्शनों, वेद, समकालीन दर्शनों के साथ–साथ जैन और बौद्ध सिद्धांतों का भी विषद् अध्ययन किया। जल्दी ही आप के ज्ञान की चर्चा दूर–दूर होने लगी। पुरी के स्थान पर आपने अपने ज्ञान से लोगों को इतना प्रभावति किया कि लोग आपको बाल सरस्वती कहने लगे। इन्हीं दिनों विजयनगर के शासक कृष्णदेव राय ने अपने दरबार में एक धार्मिक शास्त्रार्थ का आयोजन किया। जो 27 दिनों तक चला, इसमें वैष्णव मत के सिद्धांतों पर इतना तर्कपूर्ण मत रखा कि अंत में आपकी ही विजय हुई। प्रसन्न होकर कृष्णदेव राय ने आपको विपुल स्वर्ण और धन प्रदान किया, जो आपने लोगों में बांट दिया। यहां आपको "आचार्य" और "जगद्गुरु" की उपाधी प्रदान की गई। कहा जाता है कि कृष्ण की लीलास्थली गोकुल में आपने कठोर कृष्ण भक्ति की और श्रीकृष्ण आपके समक्ष "श्रीनाथ" जी के रूप में प्रकट हुए और आपको "नाम निवेदन" मंत्र प्रदान किया। बाद में आपने इस मंत्र का भाव अपने शिष्य दामोदरदास को बताया। इस तरह दामोदरदास आपके पुष्टिमार्ग में दीक्षित होने वाला पहला व्यक्ति बन गया।

धार्मिक यात्राएं

मान्यता के अनुसार स्वंय श्रीनाथ जी ने आपको गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने का आदेश दिया। आप की पत्नी का नाम महालक्ष्मी जी था। आप के दो पुत्र थे– गोपीनाथ और विट्ठलनाथ जी, जिन्हें गोसांई जी भी कहा जाता था। आपने कृष्ण भक्ति का प्रचार करने के लिए पूरे भारत में धर्मयात्राएं करना प्रारंभ किया। इन यात्राओं की संख्या तीन बताई गई है। इन यात्राओं के दौरान आपने भागवत के ऊपर 84 स्थानों पर अपने उपदेश दिए और इस पुराण के गूढ़ आध्यात्मिक अर्थों को सरल रूप में प्रकट किया। बाद में ये 84 स्थान वैष्णवों की "चौरासी बैठक" के रूप में प्रसिद्ध हुए और आज बड़ी गिनती में लोग इन स्थानों की यात्रा के लिए आते हैं। आप अपने वर्षाकाल का चार्तुमास ब्रज क्षेत्र में ही व्यतीत करते थे। आप ने कुछ समय वृन्दावन और बनारस में भी व्यतीत किया। विष्णु सम्प्रदाय के विल्वमंगल आचार्य की विनती पर आप ने इस सम्प्रदाय का आचार्य बनना स्वीकार किया। आप रुद्र सम्प्रदाय के विष्णु स्वामी से भी निकट से जुड़े रहे।

अपनी धार्मिक यात्राओं में आपने हज़ारों लोगों को "नाम निवेदन" मंत्र से दीक्षित किया। परन्तु आप के 84 शिष्य बहुत प्रसिद्ध हुए। बाद में आपने इन्हें ही 84 स्थानों पर कृष्ण भक्ति का प्रचार करने को नियुक्त किया। इन 84 वैष्णवों के जीवन के बारे में पुष्टिमार्ग के ग्रन्थों में बहुत वर्णन है। इन के जीवनी ग्रन्थ को "84 वैष्णवों की वार्ता" कहा जाता है। आप के शिष्य पूरनमल खत्री के सहयोग से ब्रजक्षेत्र में आप ने श्रीनाथ जी के सुन्दर मन्दिर का निर्माण करवाया। शीघ्र ही गोवर्धन क्षेत्र श्री कृष्ण भक्ति का प्रमुख क्षेत्र बन गया। आप ने अपना अन्तिम समय काशी में व्यतीत किया और 1530 ई. में एक दिन अपने श्रीकृष्ण का ध्यान करते हुए गंगा में प्रवेश किया और वहीं अन्तर्धान हो गए। उस समय आप की आयु केवल 52 वर्ष की थी।

वल्लभ साहित्य

वल्लभाचार्य एक महान् दार्शनिक और विद्वान थे, जिन्होंने विशाल धार्मिक साहित्य की रचना की जो आगे चल कर पुष्टिमार्ग के अनुयायियों के लिए मार्गदर्शक बना। आप के प्रमुख ग्रन्थ थे–"गायत्री भाष्या", "पूर्वमीमांसा कारिका", "तत्वार्थदीप निबंध", "शास्त्रार्थ– प्रकरण", "सर्वनिर्णय–प्रकरण", "भगवातार्थ निर्णय", "सुबोधिनी", "पत्रावलम्बन", "ब्रह्मसूत्र", "अणुभाष्य", "षोड्शग्रन्थ"। आप की रचनाओं में यमुनाष्टकम् और मधुराष्टम् बहुत प्रसिद्ध हैं– यमुनाष्टकम् में आपने श्री यमुना जी के भौतिक, आध्यात्मिक और दैविक रूपों का सुन्दर वर्णन किया है। ये यमुना जी की स्तुति है। मधुराष्टम् श्रीकृष्ण का प्रसिद्ध स्तोत्र है, जिसमें श्रीकृष्ण के प्रत्येक रूप और लीला को मधुर कह कर उनकी वंदना की गई है।

इस तरह पुष्टिमार्ग के प्रणेता वल्लभाचार्य भक्ति आन्दोलन को उस के शिखर तक ले गए, जहां उन्होंने भगवान की भक्ति में जीव को पूर्ण रूप से समर्पित होने की प्रेरणा दी। आप के बाद आप के पुत्र श्री विट्ठलदास गुसांई जी ने पुष्टिमार्ग का नेतृत्व किया। पुष्टिमार्ग में आज जो रीति–रिवाज़, मान्यताएं हैं, उनको श्री विट्ठलदास जी द्वारा ही बनाया गया है। विट्ठलदास जी ने वल्लभाचार्य के चार प्रमुख शिष्यों– सूरदास, कृष्णदास, परमानन्द और कुम्भनदास तथा स्वंय अपने चार शिष्यों– नन्ददास, छीतस्वामी, गोविन्द स्वामी और चतुर्भुजदास को लेकर एक समूह स्थापित किया जो बाद में "अष्टछाप" के रूप में प्रसिद्ध हुआ। अष्टछाप समूह के सभी संत श्रेष्ठ कवि, संगीतकार और कीर्तनकार थे, जिनका हिन्दी धार्मिक काव्य और साहित्य में विशेष योगदान है।

पुष्टिमार्ग का दर्शन

पुष्टिमार्ग वैष्णव सम्प्रदाय की कृष्णमार्गी शाखा है, जिस में ब्रह्म के सगुण रूप श्रीकृष्ण की "श्रीनाथ" जी के रूप में पूजा की जाती है। वल्लभाचार्य के अनुसार जीव ब्रह्म ही है और ब्रह्म से अभिन्न है। भगवान की लीला से जीव में से ब्रह्म का अंश "आनन्द" निकल जाता है, जिस से वह बंधन और अज्ञान में पड़ जाता है। जीव का जन्म और विनाश नहीं होता, शरीर की उत्पत्ति और नाश होता है। वल्लभाचार्य ने शुद्धाद्वैत के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। उनके अनुसार ब्रह्म माया से निर्लेप है, इसलिए वह शुद्ध है और जीव और ब्रह्म की अभिन्नता है। शंकराचार्य ने जीवात्मा को ज्ञानस्वरूप माना है परन्तु वल्लभ के अनुसार वह ज्ञाता है। आपने पुष्टिमार्ग की स्थापना की। आपके अनुसार आत्मा को परमात्मा के साथ मिलकर ही आनन्द अर्थात् पुष्टि की प्राप्ती होती है। इसीलिए इस को "पुष्टिमार्ग" कहा गया है। इस मार्ग के अनुसार परमात्मा की प्राप्ति केवल उसकी दया द्वारा ही होती है, उसे किसी प्रयत्न या साधन द्वारा नहीं प्राप्त किया जा सकता, बल्कि जब परमात्मा स्वंय जीव को प्राप्त होना चाहता है,तभी वह जीव को प्राप्त होता है। इसीलिए पति रूप में श्रीकृष्ण की सेवा करना ही जीव का धर्म है। सृष्टि ब्रह्म की आत्मकृति है। ब्रह्म से जगत् पैदा हुआ है, लेकिन फिर भी ब्रह्म में कोई विकृति नहीं आती। जगत्

की न तो उत्पत्ति होती है न ही विनाश। वास्तव में उसका अविर्भाव और तिरोभाव होता है। वल्लभाचार्य के अनुसार जगत् और संसार भिन्न है। जगत् ब्रह्म द्वारा पैदा किया गया है, वो नित्य है, उसमें कोई विकार नहीं है, लेकिन संसार हमारे अहंकार और कामनाओं का परिणाम है जिससे एक काल्पनिक लोक का निर्माण होता है जो नित्य नहीं है। ज्ञान होने पर संसार का नाश हो जाता है।

पुष्टिमार्ग के अनुसार पुष्टि चार प्रकार की होती है–

1. **प्रवाह पुष्टि**
   जिस में सांसारिक कार्यों के साथ–साथ साधक भगवान की प्राप्ति के लिए भी प्रयत्नशील रहता है।
2. **मर्यादा पुष्टि**
   जिस में वह संयमित हो कर भगवान के श्रवण–कीर्तन की ओर अग्रसर होता है।
3. **पुष्टि भक्ति**
   इस में साधक भक्ति के साथ–साथ ज्ञान प्राप्ति में भी संलग्न रहता है।
4. **शुद्ध पुष्टि**
   इस में साधक भगवान के प्रेम में डूब जाता है।

पुष्टिमार्ग में श्रीकृष्ण प्रमुख देवता हैं और श्रीयमुना उनकी प्रमुख शक्ति है। यह माना जाता है कि श्री यमुना ने ही वल्लभाचार्य को पुष्टिमार्ग की दीक्षा प्रदान की। पुष्टिमार्ग में श्रीकृष्ण की कई रूपों में पूजा की जाती है–श्रीनाथ जी, नवनीत प्रिय, बालकृष्ण, विट्ठलनाथ, द्वारिकाधीश,गोकुलनाथ, मदनमोहन, नटखटलाल, गोपीनाथ आदि। श्रीकृष्ण के इन्हीं रूपों के देश के विभिन्न भागों में कई मन्दिर हैं।

आराधना और उत्सव

पुष्टिमार्ग में श्रीकृष्ण की स्वार्थहीन भक्ति और प्रेम को प्रमुखता दी गई है, जिस को प्रकट करने का ढंग "सेवा" है। श्रीकृष्ण या ठाकुर जी की मूर्ति की विभिन्न अलंकारों से पूजा करना ही "सेवा" है, इसे "क्रियात्मक सेवा" कहा गया है, जिसमें ठाकुर जी की सुन्दर मूर्ति को सुन्दर पोशाकों से सजाया जाता है और धूप, दीप, पुष्पों और नैवेद्य से उनकी पूजा की जाती है। जहां यह पूजा की जाती है, उस स्थान को "हवेली" कहा जाता है, यह एक रोज़ चलने वाली प्रक्रिया है, जिसमें दर्शन, राग, भोग, वस्त्र, श्रृंगार शामिल है। इसे "दैनिक सेवा" कहा जाता है। जिसे गोस्वामी विट्ठलदास ने प्रारम्भ किया था। पुष्टिमार्ग में पुष्टि प्राप्त करने के लिए "सेवा" को सबसे महत्त्वपूर्ण माना गया है। लेकिन यह "क्रियात्मक सेवा" भक्ति का प्रथम सोपान है। इस क्रियात्मक सेवा के पश्चात् ही भावनात्मक सेवा का आरम्भ होता है। यह माना गया है कि अगर भक्त की बाहरी शक्तियां भगवान की सेवा में लगा दी जाएं तो इससे उसके मोह और अहंकार का नाश होगा, इससे भक्ति का दूसरा सोपान आरम्भ होगा और भावात्मक सेवा भक्त को प्रभु की ओर प्रवृत कर देगी। इसी अहंकार और ममता को समाप्त करके प्रभु की ओर प्रवृत होना ही असली समर्पण है।

पुष्टिमार्ग अपने रंग–बिरंगे और मनमोहक त्योहारों के लिए भी प्रसिद्ध है। इसे "वर्षोत्सव" कहा जाता है। ये वर्षोत्सव के उत्तम अवसर माने जाते हैं। प्रमुख वर्षोत्सव हैं– फूलडोल, होली, व्रतचर्चा, रासलीला, गोवर्धनपूजा, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, श्री राधा अष्टमी आदि। वल्लभाचार्य ने अपनी यात्राओं में जहां–जहां श्रीकृष्ण भक्ति और श्रीमद्भागवत का उपदेश दिया, वे स्थान पवित्र माने गए। वल्लभ सम्प्रदाय में ये स्थान पवित्र माने गए और कालांतर में ये स्थान पवित्र तीर्थ बन गए। इन स्थानों को "बैठक" कहा गया, भाव जहां बैठ कर वल्लभाचार्य ने अपने शिष्यों को उपदेश दिया। ऐसे कुल 84 स्थान हैं जो पूरे देश में फैले हुए हैं। इन में से 24 बैठकें ब्रजक्षेत्र में हैं, जो प्रसिद्ध "ब्रज की चौरासी कोस यात्रा" के विभिन्न स्थानों में है। जो मुख्यरूप से गोकुल, मथुरा, गोवर्धन, बरसाना, नन्दगांव, कोकिलावन, चीरघाट, मानसरोवर और वृंदावन में हैं।

बदलाव और निरन्तरता

मध्यकाल के उस धार्मिक असहिष्णु माहौल में पुष्टिमार्ग को भी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। वल्लभाचार्य सिकंदर लोधी के समकालीन थे। सिकन्दर लोधी अपनी धर्मांधता के लिए प्रसिद्ध था और उस ने हिन्दुओं की धार्मिक यात्राओं और क्रियाओं पर कई प्रकार के अनुचित प्रतिबंध लगाए हुए थे। वल्लभाचार्य को इन प्रतिबंधों के खिलाफ संघर्ष भी करना पड़ा।

बाद में औरंगज़ेब के शासनकाल में उस की कट्टर धार्मिक नीति का शिकार पुष्टिमार्ग को भी होना पड़ा। औरंगजेब के आदेश से गैर–मुस्लमानों के धार्मिक स्थालों को नष्ट किया जाने लगा। इन परिस्थितियों में श्रीनाथ जी के विग्रह को बचाने के लिए उसे गोवर्धन से हटाने का फैसला किया गया और पुष्टिमार्ग के अनुयायियों को गोकुल छोड़ना पड़ा और मेवाड़ के महाराजा राजसिंह से आश्वासन पाकर पुष्टिमार्गियों ने राजस्थान का रूख किया। विग्रह को एक बैलगाड़ी में रखा गया और प्रस्थान किया गया। लेकिन जब बैलगाड़ी सिंहद (Sihand) नामक स्थान पर पहुंची तो गाड़ी के पहिए कीचड़ में धंस गए और गाड़ी आगे न बढ़ सकी। इसे श्रीनाथ जी की लीला माना गया कि श्रीनाथ जी को रहने के लिए यह स्थान प्रिय है, और इसी स्थान पर विग्रह को प्रतिष्ठित किया गया। यहां एक भव्य मन्दिर का निर्माण किया गया, जिसे "श्रीनाथ मन्दिर" या "श्रीनाथ की हवेली" कहा गया। जल्दी ही इस मन्दिर के आस पास एक छोटा सा नगर बस गया और इसकी प्रसिद्धि दिन प्रतिदिन बढ़ती गई। बाद में इस नगर को नाथद्वारा कहा जाने लगा, जो वल्लभ सम्प्रदाय का प्रसिद्ध केन्द्र बन गया और राजस्थान और गुजरात से कई श्रद्धालू आकर यहां बस गए। पुष्टिमार्ग का राजस्थान और गुजरात में बहुत विकास हुआ। नाथद्वारा आज एक प्रसिद्ध धार्मिक केन्द्र के साथ–साथ पर्यटन केन्द्र के रूप में भी उभर रहा है। श्रीनाथ मन्दिर के साथ–साथ नाथद्वारा अपनी पिछवई (Pichhwai) चित्रकला के लिए भी प्रसिद्ध है। पिछवई चित्रकला शैली में एक कपड़े पर श्रीकृष्ण की जीवन लीलाओं से सम्बन्धित चित्र बनाए जाते हैं। कृष्ण भक्ति के लिए "हवेली संगीत" की भी यहां अच्छी प्रसिद्धि है।

निष्कर्ष

इस तरह मध्ययुग के उस धार्मिक असहिष्णु वातावरण में पुष्टिमार्ग ने एक नवजीवन का संचार किया।

जिस में एकमात्र श्रीकृष्ण के प्रति समर्पण को ही महत्ता दी गई। पुष्टिमार्ग ने जहां भारतीय दर्शन को शुद्धाद्वैतवाद का नया दर्शन दिया, वहीं अष्टछाप समूह की स्थापना ने भारतीय, विशेषरूप से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। इन कवियों के लिखे दोहों और भक्तिगीत साधारण लोगों के लिए वेद मंत्रों की तरह पवित्र बन गए। इन कवियों ने लोकभाषा में भक्ति के गूढ़ रहस्यों को लोगों को समझाया। संगीत के क्षेत्र में पुष्टिमार्ग ने "हवेली संगीत" के द्वारा भारतीय संगीत को समृद्ध किया। पुष्टिमार्ग के रंग बिरंगे त्योहारों और क्रियाओं ने जहां समाज को हर्षित किया, वही इसने विविधता भरे भारत को और रंगीन बना दिया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Burz, Richard, The Bhakti Sect of Vallabhacharya, Jhonsons Press, Delhi, 1965
2. Grewal, J.S. Religious Movements and Institutions in Medieval India, PHISPC, Oxford University Press, New Delhi, 2006
3. Sharma, Krishna, Bhakti and the Bhakti Movement : A New Perspective, Munshiram Manoharlal, New Delhi. 1987
4. भक्तमाला, नाभादास, गीता प्रैस, गोरखपुर।
5. संत अंक, गीता प्रैस, गोरखपुर 2009।

Websites

6. www.bharatdiscovery.org
7. www.hindupedia.com
8. www.nathdwaratemple.org